एक नज़राना लाया हूँ
ख़ातिर करने आया हूँ
नज़रों से निहाल करने आया हूँ
कमाल अपनी दीखाने आया हूँ
मुसफ़िर पराये देश
 से हूँ मैं आया
सबकों अपने घर का
 दीदार कराने आया
ज्ञान योग के पंख लगा
पार वतन ले जाऊंगा
पावन तुम्हें बनाऊंगा
ज्ञान अमृत पिलाऊंगा
5 विकारों से मुक्त कराने मैं आया
रावण के राज्य से छुड़ाऊंगा
मस्त फ़क़ीर बनाऊंगा
बेगमपुर का बादशाह बनाऊंगा
डबल सिरताज बनाऊंगा
अव्यक्त फ़रिश्ता बनाऊंगा
सम्पन्न सम्पूर्ण देवता बनोगे
सचखंड के सुख भोगोगे
निश्चिन्त जीवन जियोगे

वादा है मेरा कुछ न रखूँगा
पास मैं अपने
खाली हो लौट जाऊँगामाला माल कर
तुमकों
वतन में बैठ जाऊंगा।।

ॐ शांति!!!